International Journal of Education and Science Research Review
IJESRR
Volume-9, Issue-5 Sep - Oct – 2022
E-ISSN 2348-6457
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

उत्तराखण्ड के नैनीताल जिले में संचालित उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर के परिप्रेक्ष्य में भावात्मक परिपक्वता का अध्ययन

विजेता बिष्ट
शोधार्थी
शिक्षाशास्त्र विभाग
मालवांचल विश्वविद्यालय
इन्दौर, म0प्र0

डा0 सुरक्षा बंसल
शोध निर्देशिका
शिक्षाशास्त्र विभाग
मालवांचल विश्वविद्यालय
इन्दौर, म0प्र0

प्रस्तावना

किसी भी समाज को संगठित एवं विकसित बनाए रखने के लिए उसमें विद्यमान लोगों के आपसी सम्बन्धों, अन्तःक्रियाओं, सहयोग एवं सामन्जस्य का महत्वपूर्ण योगदान होता है। आज का समाज भौतिक उपलब्धियों की दौड़ में जिस प्रकार मानवीय मूल्यों के हनन में लगा हुआ है उसे देखकर यह लगता है कि आने वाले वर्षो में चारो ओर केवल तिमिरतोम् ही अवशेश रह जायेगा और लोग विघटन की त्रासदी में अपना सर्वस्व विनश्ट करने के लिए बाध्य हो जायेंगे। क्योंकि सत् चित् आनन्द की धरोहर हमारी संस्कृति अस्त की गोधूली में अपना सर्वस्व विसर्जित कर रही है। भौतिक ज्ञान के आडम्बर में मनुश्य की परार्थ भावनायें अहम् की कुण्ठाओं में धीरे धीरे सिमटती जा रही है। भोगवाद के प्रदूशण में लिप्त मनुश्य नैसर्गिक चिन्तन एवं चेतना से दूर भग्नाशाओं की काई में उलझता जा रहा है। उसके हास्य एवं रूदन में केवल क्रन्दन एवं कोलाहल के षब्द ही परिलक्षित होते हैं क्योंकि इसमें सहज स्नेह की सरल पृश्ठभूमि को अनेक प्रकार की विसंगतियों का शिकार बनाया है। ऐसी स्थिति में मानव समाज को स्थिरता प्रदान करने के लिए तथा उसमें सृजन के स्वरूप को विकसित करने के लिए यह आवष्यकहै कि इसमें धर्म को स्थापित किया जायं, क्योंकि धर्म के बिना समाज में संगठनात्मक प्रवृत्तियों का विकास सम्भव नहीं है। इसके बिना मानवता निरन्तर दानवता का शिकार होती है। इसके साथ ही साथ उपयुक्त आदर्शों एवं मूल्यों की स्थापना में सामाजिक उन्नति के लिए आवष्यकहै। क्योंकि विघटनकारी मूल्य केवल व्यक्ति का ही विनाश नहीं करते बल्कि सम्पूर्ण मानव समाज को अभिशप्त बना देते हैं। इस सन्दर्भ में संवेगों की भी अपनी एक महत्वपूर्ण भूमिका है। संरचनात्मक संवेगों की पृश्ठभूमि में ही मानव अभिप्रेरित होकर साहित्य, संगीत तथा विज्ञान का अनुगामी होता है। वह अपनी विशमताओं को उन्नयन के माध्यम से एक संगठित आयाम प्रदान करता है। प्रस्तुत अध्ययन में उन सभी पक्षों पर सर्वाधिक बल दिया गया है जिनके द्वारा सामाजिक सन्तुलन एवं सद्भाव निरन्तर बना रहे।

राष्ट कि विकास के लिए यह आवश्यक है कि उसमें रहने वाले लोग मनोशारीरिक दृश्टियों से स्वस्थ हो। जब राष्ट के लोग सज्जन, कर्तव्यनिश्ठ, संयमी, धर्मपरायण एवं जागरूक होते हैं तो इससे राष्ट की चेतना, चिन्तन एवं आत्मबोध का विकास होता है। राष्ट का प्रत्येक नागरिक अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन सहजभाव से करता है। वह राष्ट के उत्थान के

लिए पूर्णरूप से समर्पित होता है। राष्ट की एकाग्रता की भावना पर बल देता है क्योंकि देश की अखण्डता एवं एकता दोनों ही राष्ट्र के संगठन के लिए परम आवष्यकहैं। राष्ट भावना में कमी का परिणाम यह है कि स्वाधीनता के पाँच दशक बीत जाने पर भी हम उस आयाम तक नहीं पहुँच सके हैं जो हमारे लिए अपेक्षित हैं। हमारे कर्णधारों ने राश्ट्रीय भावना एवं चिन्तन का सबसे अधिक दुरूपयोग किया है। भोली भाली जनता को गुमराह कर अपने स्वार्थ की सिद्धि की है। यही कारण है कि बार बार चुनाव के भार से जनता दुखी होती जा रही है। राजनीति धर्म से अलग हटकर अनीति की ओर अग्रसर हो रही है। इसका परिणाम यह हो रहा है कि सम्पूर्ण राष्ट में पृथकवाद की भावना बलवती हो रही है। इसका परिणाम यह हो रहा है कि सम्पूर्ण राष्ट तमस, कलुश एवं विघटन का शिकार हो रहा है, यह आवष्यकहै कि लोगों के मन में राश्ट्रीय चेतना उत्पन्न की जायं जिससे लोग अपने राष्ट के महत्व को समझें तथा उसे विष्व के अन्य राश्ट्रों की तुलना में अग्रणी बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दें।

अन्तर्राश्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में भी प्रस्तुत षोध अध्ययन की महत्वपूर्ण भूमिका है क्योंकि आज विष्व के राश्ट्रों में एक विशेश प्रकार की हलचल उत्पन्न हो रही है। आतंकवाद सम्पूर्ण राश्ट्रों की एक जटिल समस्या बनता जा रहा है। अपने राष्ट को सिरमौर बनाने की भावना से दूसरे राष्ट का षोशण किया जा रहा है। अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने के लिए दूसरे राष्ट के उद्योग धन्धों को चौपट किया जा रहा है। कहने का तात्पर्य यह है कि प्रत्येक राष्ट को कमजोर बनाने का प्रयास किया जा रहा है। विष्व के विकसित राष्ट यह कभी भी नहीं चाहते है कि विकासशील एवं अविकसित राष्ट उन्नति करें तथा विकसित राष्ट बनें क्योंकि इससे उनके विकसित स्वरूप को चोट पहुँचती है। ऐसी स्थिति में जब सम्पूर्ण विष्व विघटन एवं विनाश की ओर अग्रसर हो रहा है ऐसी स्थिति में यह आवष्यकहै कि उसमें विष्व बन्धुत्व की भावना विकसित की जायं जिससे लोग आतंकवाद एवं अर्थवाद से मुक्त होकर मानववाद को ग्रहण कर सकें।

इस प्रकार पारिवारिक, षैक्षिक, सामाजिक, राश्ट्रीय एवं अन्तर्राश्ट्रीय धरातल पर प्रस्तावित अध्ययन का महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है क्योंकि संचार की सुविधाओं ने सम्पूर्ण विष्व को एक नया आयाम दिया है। हमारे सम्बन्ध सीमित न होकर असीमित हो गए हैं। यही कारण है कि विष्व के एक कोने में घटने वाली घटना का प्रभाव विष्व के दूसरे लोगों पर भी पड़ता है। आज के विद्यार्थी जहाँ एक ओर अध्ययन के माध्यम से अपने ज्ञान में वृद्धि करते हैं वहीं दूसरी ओर विष्व के सम्बन्ध में विशेश जानकारी भी रखते हैं। वर्तमान में क्षेत्रवाद, भाशावाद, आतंकवाद, सम्प्रदायवाद, जातिवाद, वर्गवाद आदि में उलझा हुआ सम्पूर्ण मानव समाज दुखी हो रहा है। वह बाहरी एवं भीतरी दोनों प्रकार के दुखों से पीड़ित है। ऐसी स्थिति में सम्पूर्ण मानव समाज में सत् चित् आनन्द की अनुभूति जगाने के लिए यह आवष्यकहै कि उसके व्यक्तित्व को संगठित किया जायं, उसमें समायोजनशीलता को विकसित किया जायं। प्रस्तावित अध्ययन इस दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है तथा लोगों में मंगल भावनाओं को जागृत कर उन्हें मानसिक सुख और षान्ति प्रदान करने में सहयोग प्रदान कर सकेगा।

समस्या कथन

उत्तराखण्ड के नैनीताल जिले` में संचालित माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर के परिप्रेक्ष्य में भावात्मक परिपक्वता का अध्ययन।

समस्या कथन में प्रयुक्त प्रत्ययों का स्पष्टीकरण निम्न है–

सामाजिक–आर्थिक स्तर

समाज में व्यक्ति की सामाजिक आर्थिक स्थिति का निर्धारण उसकी जाति, शिक्षा, व्यवसाय एवं आय के आधार पर होता है। अनेक विद्वान यह मानते हैं कि आधुनिक समाज में सामाजिक स्थिति का निर्धारण आर्थिक स्थिति के आधार पर होता है। उसी आधार पर व्यक्तियों को उच्च, मध्य एवं निम्न वर्गों में विभाजित किया जाता है।

स्टेगनर के अनुसार, 'निर्धन माता पिता की सन्तानों में अर्न्तमुखता, आत्महीनता तथा संवेगात्मक अपरिपक्वता जैसी प्रवृत्तियां देखने को मिलती हैं। सामाजिक आर्थिक स्तर का व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों पर विशेश प्रभाव पड़ता है।'

भावात्मक परिपक्वता

भावात्मक परिपक्वता का प्रभाव मानव के सम्पूर्ण जीवन पर उसके व्यवहार को एक सही दिशा देने के रूप में पड़ता है।

भावात्मक विकास मे परिपक्वता का बहुत अधिक महत्व है। इस सम्बन्ध मे **गुड एन0एफ0 एवं जोनस** द्वारा किये गये अध्ययन इस बात की पुष्टि करते है। भावनाओं के विकास मे परिपक्वता महत्त्वपूर्ण प्रभाव डालती है।

भावात्मक रूप से परिपक्व व्यक्ति अपने आत्मविष्वास सुरक्षा की भावना व आत्मसम्मान द्वारा न केवल भावनाओं पर नियंत्रण करने मे सक्षम होता है। अपितु इस प्रकार की परिस्थियाँ उत्पन्न होने पर दूसरे व्यक्तियों को निर्देशित करने मे पूर्ण रूप से योग्य होता है।

हम उस व्यक्ति को भावात्मक रूप से परिपक्व कहते है, जो अपनी भावनाओं पर उचित रखते हुए उन्हें भली–भाँति अभिव्यक्त कर सकें।

प्रस्तुत षोध अध्ययन के उद्देष्य

कोई भी व्यक्ति जब किसी कार्य को करता है, उसके पीछे कोई ना कोई उद्देश्य अवश्य रहता है, क्योंकि कोई भी व्यक्ति बिना किसी उद्देश्य के कोई कार्य नहीं करता, उद्देश्य रहित कार्य करना ठीक उसी प्रकार होता है जैसे– अंधेरे में तीर चलाना या फिर मंजिल की पता हुए बिना ही किसी पथ पर निकल जाना। इसीलिए जब एक शोधार्थी अपने शोध कार्य को प्रारम्भ करता है वह अपने शोध कार्य के लिए कुछ उद्देश्य निर्धारित करता है। इन उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए वह अपने शोध कार्य को सम्पादित करता है।

डेविस ने उद्देश्य की महत्वता को स्वीकार करते हुए कहा है– वह कार्य जो लक्ष्य का ज्ञान प्राप्त करके किया जाता है वह सदैव सार्थक होता है। लक्ष्य के अर्थों के आधार पर कार्यकर्ता अन्य वस्तुओं से अर्थ खोजता होता है। पूर्ण लक्षित उद्देश्य क्रिया को सही दिशा में ले जाते हैं तथा उसे सफल व सार्थक बनाते हैं।'

प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी द्वारा कुछ उद्देश्य को निर्धारित किया गया है जो निम्न प्रकार है–

1.0 उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की भावात्मक परिपक्वता का अध्ययन।

1.1 उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के सांवेगिक स्थिरता का अध्ययन।

1.2 उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की सांवेगिक प्रगति का अध्ययन।

1.3 उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक समायोजनशीलता का अध्ययन।

1.4 उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व एकीकरण का अध्ययन।

1.5 उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के अनाश्रितता का अध्ययन।

प्रस्तुत षोध अध्ययन की परिकल्पनायें

हैंड नेट के अनुसार (1955) 'परिकल्पना शोधकर्ता की आंखें होती हैं जिनके द्वारा वह समस्या गत अव्यवस्था में झांक कर देखता है तथा उनमें समस्या का समाधान होता है।'

वेस्ट (1977) ने परिकल्पना को अपने शब्दों में इस प्रकार परिभाषित किया है– 'परिकल्पना एक ऐसा पूर्वानुमान है और जो अनुसंधान कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता करते हैं अर्थात बाद में परीक्षण के द्वारा वह सत्यापित हो जाती है तो समस्या का समाधान हो जाता है तथा वस्तुस्थिति स्पष्ट हो जाती है।' इस प्रकार परिकल्पनाएं शोध पथ पर प्रकाश स्तम्भ की भाँति कार्य करती हैं।'

परिकल्पनाओं का निर्माण शोध कार्य के अनुसार किया जाता है। प्रस्तुत अध्ययन में शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है। इन्हें सांख्यिकी परिकल्पनाएँ भी कहते हैं। इनका परीक्षण सांख्यिकीय विधि द्वारा किया जाता है। शून्य परिकल्पना एक कथन है जो हमें बताती है कि दो चरों के बीच कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए निम्न शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है–

1.0 उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की भावात्मक परिपक्वता में सार्थक अन्तर नहीं है।

1.1 उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के सांवेगिक स्थिरता में सार्थक अन्तर नहीं है।

1.2 उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की सांवेगिक प्रगति में सार्थक अन्तर नहीं है।

1.3 उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक समायोजनशीलता में सार्थक अन्तर नहीं है।

1.4 उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व एकीकरण में सार्थक अन्तर नहीं है।

1.5 उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के अनाश्रितता में सार्थक अन्तर नहीं है।

प्रस्तुत षोध अध्ययन का परिसीमन

1- प्रस्तुत षोध अध्ययन उत्तरखण्ड के नैनीताल जनपद तक सीमित किया गया है।

2- प्रस्तुत षोध अध्ययन उत्तरखण्ड के नैनीताल जनपद के माध्यमिक विद्यालयों तक सीमित किया गया है।

3- प्रस्तुत षोध अध्ययन उत्तरखण्ड के नैनीताल जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के भावात्मक परिपक्वता, सामाजिक–आर्थिक स्तर तक सीमित किया गया है।

शोध उपकरण एवं विधियाँ

षोधार्थी को अपने षोधकार्य में समस्या निर्धारण करने, परिकल्पना करने, न्यादर्श चुनने के पष्चात् विभिन्न संमंको की आवष्यकता पड़ती है। समकों की आवष्यकता के अनुरूप विभिन्न उपकरणों की आवष्यकता होती है जैसे मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्रष्नावली, साक्षात्कार, अवलोकन, निर्धारण मापनी आदि। षोधकर्ता ने अपने अध्ययन की वस्तु तथा लक्ष्य समूह को ध्यान में रखते हुए निम्न प्रष्नावलियों को उपकरणों के रूप में का प्रयोग किया है।

1- **सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी–** राजवीर सिंह, श्री राधेष्याम एवं श्री सतीश कुमार द्वारा उच्च, मध्य, निम्न सामाजिक एवं आर्थिक स्तर मापने के लिए प्रष्नावली, नेशनल साइकोलॉजिकल कारपोरेशन, आगरा।

2- **डॉ. यशवीर सिंह एवं डॉ. महेश भार्गव–** भावात्मक परिपक्वता मापनी, नेशनल साइकोलॉजिकल कारपोरेशन, आगरा।

न्यादर्श चयन

षोध कार्य की विधि को सुगम, सरल, अल्पव्ययी तथा षुद्ध बनाने हेतु न्यादर्श का उपयोग किया जाता है। न्यादर्श समग्र का वह अंश होता है जिसमें समग्र की समस्त विशेषतायें पायी जाती है।

प्रस्तुत षोध कार्य हेतु मेरठ जिले के विभिन्न उच्च माध्यमिक विद्यालयों के 500 विद्यार्थियों को यादृच्छिक न्यादर्श (Random Sampling) विधि द्वारा चुना गया है।

1.0 उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की भावात्मक परिपक्वता का अध्ययन।

परिकल्पना–

1.0 उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की भावात्मक परिपक्वता में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या 1.0

उच्च माध्यमिक स्तर की छात्र एवं छात्राओं की भावात्मक परिपक्वता के मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मूल्यों को प्रदर्शित करने वाली तालिका

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मूल्य	सार्थकता
छात्र	250	141.92	9.29	**5.16****	**सार्थक**
छात्रायें	250	146.12	8.92		

'' टी–मूल्य **5.16>** तालिका मूल्य **2.58 (0.01 सार्थकता स्तर परद्ध**

तालिका संख्या 1०0 के अर्न्तगत उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की भावात्मक परिपक्वता के मध्यमान में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए तुलना की गयी हैं इस तालिका में सांख्यिकीय गणना द्वारा प्राप्त स्वतन्त्रता के अंश 498 पर **'टी'** परीक्षण का मूल्य 5.16 सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थकता स्तर से उच्च है जबकि 0.01 सार्थकता के स्तर पर तालिका का मान 2.58 है। उपरोक्त तालिका में उच्च मध्यमान 146.12 जो माध्यमिक स्तर की छात्राओं की भावात्मक परिपक्वता का है तथा 141.92 जोकि छात्रों की भावात्मक परिपक्वता का है। सांख्यिकीय गणना से प्राप्त 'टी' का मान तालिका के मान से तुलनात्मक रूप में अधिक है। इस प्रकार इस परीक्षण परिणाम में छात्राओं की भावात्मक परिपक्वता छात्रों की तुलना में उच्च स्तरीय है।

अतः प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर पूर्व में निर्मित षून्य परिकल्पना ($H_0$1.0) 'उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की भावात्मक परिपक्वता में सार्थक अन्तर नहीं है' अस्वीकृत की जाती है।

1.1 उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के सांवेगिक स्थिरता का अध्ययन।

परिकल्पना–

1.1 उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की सांवेगिक स्थिरता में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या 1.1

उच्च माध्यमिक स्तर की छात्र एवं छात्राओं के सांवेगिक स्थिरता के मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मूल्यों को प्रदर्शित करने वाली तालिका

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मूल्य	सार्थकता
छात्र	250	28.19	4.19	**3.19****	**सार्थक**
छात्रायें	250	29.40	4.29		

'' टी–मूल्य **3.19>** तालिका मूल्य **2.58 (0.01 सार्थकता स्तर परद्ध**

तालिका संख्या 1.1 के अर्न्तगत उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के सांवेगिक स्थिरता के मध्यमान में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए तुलना की गयी हैं इस तालिका में सांख्यिकीय गणना द्वारा प्राप्त स्वतन्त्रता के अंश 498 पर **'टी'** परीक्षण का मूल्य 3.19 सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थकता स्तर से उच्च है जबकि 0.01 सार्थकता के स्तर पर तालिका का मान 2.58 है। उपरोक्त तालिका में उच्च मध्यमान 29॰40 जो माध्यमिक स्तर की छात्राओं की सांवेगिक स्थिरता का है तथा 28.19 जोकि छात्रों के सांवेगिक स्थिरता का है। सांख्यिकीय गणना से प्राप्त 'टी' का मान तालिका के मान से तुलनात्मक रूप में अधिक है। इस प्रकार इस परीक्षण परिणाम में छात्राओं का सांवेगिक स्थिरता छात्रों की तुलना में उच्च स्तरीय है।

अतः प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर पूर्व में निर्मित षून्य परिकल्पना ($H_0$1.1) 'उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की सांवेगिक स्थिरता में सार्थक अन्तर नहीं है' अस्वीकृत की जाती है।

1.2 उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की सांवेगिक प्रगति का अध्ययन।

परिकल्पना–

1.2 उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की सांवेगिक प्रगति में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या 1.2

उच्च माध्यमिक स्तर की छात्र एवं छात्राओं के सांवेगिक प्रगति के मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मूल्यों को प्रदर्शित करने वाली तालिका

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मूल्य	सार्थकता

छात्र	250	28.82	3.77	0.83	असार्थक
छात्रायें	250	29.11	4.04		

तालिका संख्या 1.2 के अर्न्तगत उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के सांवेगिक प्रगति के मध्यमान में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए तुलना की गयी हैं इस तालिका में सांख्यिकीय गणना द्वारा प्राप्त स्वतन्त्रता के अंश 498 पर **'टी'** परीक्षण का मूल्य 0.83 सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थकता स्तर से कम है जबकि 0.05 सार्थकता के स्तर पर तालिका का मान 1.96 है। उपरोक्त तालिका में उच्च मध्यमान 29०11 जो माध्यमिक स्तर की छात्राओं की सांवेगिक प्रगति का है तथा 28०82 जोकि छात्रों की सांवेगिक प्रगति का है। सांख्यिकीय गणना से प्राप्त 'टी' का मान तालिका के मान से तुलनात्मक रूप में कम है। इस प्रकार इस परीक्षण परिणाम में छात्राओं का सांवेगिक स्थिरता छात्रों की तुलना में उच्च स्तरीय है।

अतः प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर पूर्व में निर्मित षून्य परिकल्पना ($H_0$1.2) 'उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की सांवेगिक प्रगति में सार्थक अन्तर नहीं है' स्वीकृत की जाती है।

1.3 उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक समायोजनशीलता का अध्ययन।

परिकल्पना–

1.3 उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक समायोजनशीलता में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या 1.3

उच्च माध्यमिक स्तर की छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक समायोजनशीलता के मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मूल्यों को प्रदर्शित करने वाली तालिका

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मूल्य	सार्थकता
छात्र	250	28.40	3.97	1.70	असार्थक
छात्रायें	250	29.04	4.45		

तालिका संख्या 1.3 के अर्न्तगत उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक समायोजनशीलता के मध्यमान में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए तुलना की गयी हैं इस तालिका में सांख्यिकीय गणना द्वारा प्राप्त स्वतन्त्रता के अंश 498 पर **'टी'** परीक्षण का मूल्य 1.73 सार्थकता के 0.05 स्तर पर सार्थकता स्तर से कम है जबकि 0.05 सार्थकता के स्तर पर तालिका का मान 1.96 है। उपरोक्त तालिका में उच्च मध्यमान 29.04 जो माध्यमिक स्तर की छात्राओं की सामाजिक समायोजनशीलता का है तथा 28.40 जोकि छात्रों की सामाजिक समायोजनशीलता का है। सांख्यिकीय गणना

से प्राप्त 'टी' का मान तालिका के मान से तुलनात्मक रूप में कम है। इस प्रकार इस परीक्षण परिणाम में छात्राओं का सामाजिक समायोजनशीलता छात्रों की तुलना में उच्च स्तरीय है।

अतः प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर पूर्व में निर्मित शून्य परिकल्पना ($H_01.3$) 'उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक समायोजनशीलता में सार्थक अन्तर नहीं है' स्वीकृत की जाती है।

1.4 उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व एकीकरण का अध्ययन।

परिकल्पना–

1.4 उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की व्यक्तित्व एकीकरण में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या 1.4

उच्च माध्यमिक स्तर की छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व विघटन के मध्यमान,

मानक विचलन एवं टी–मूल्यों को प्रदर्शित करने वाली तालिका

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मूल्य	सार्थकता
छात्र	250	28.46	4.01	1.84	सार्थक
छात्रायें	250	29.15	4.35		

तालिका संख्या 1.4 के अर्न्तगत उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व एकीकरण के मध्यमान में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए तुलना की गयी हैं इस तालिका में सांख्यिकीय गणना द्वारा प्राप्त स्वतन्त्रता के अंश 498 पर 'टी' परीक्षण का मूल्य 1.84 सार्थकता के 0.05 स्तर पर सार्थकता स्तर से कम है जबकि 0॰05 सार्थकता के स्तर पर तालिका का मान 1.96 है। उपरोक्त तालिका में उच्च मध्यमान 29.15 जो माध्यमिक स्तर की छात्राओं की व्यक्तित्व एकीकरण का है तथा 28.46 जोकि छात्रों की व्यक्तित्व एकीकरण का है। सांख्यिकीय गणना से प्राप्त 'टी' का मान तालिका के मान से तुलनात्मक रूप में कम है। इस प्रकार इस परीक्षण परिणाम में छात्राओं का व्यक्तित्व एकीकरण छात्रों की तुलना में उच्च स्तरीय है।

अतः प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर पूर्व में निर्मित शून्य परिकल्पना ($H_01.4$) 'उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की व्यक्तित्व एकीकरण में सार्थक अन्तर नहीं है' स्वीकृत की जाती है।

1.5 उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के अनाश्रितता का अध्ययन।

परिकल्पना–

1.5 उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की अनाश्रितता में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या 1.5

उच्च माध्यमिक स्तर की छात्र एवं छात्राओं के अनाश्रितता के मध्यमान, मानक विचलन

एवं टी–मूल्यों को प्रदर्शित करने वाली तालिका

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मूल्य	सार्थकता
छात्र	250	28.05	4.16	3.53**	सार्थक
छात्रायें	250	29.42	4.50		

''टी–मूल्य **3.53 >** तालिका मूल्य **1.96 (0.05 सार्थकता स्तर परद्ध**

तालिका संख्या 1.5 के अर्न्तगत उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के अनाश्रितता के मध्यमान में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए तुलना की गयी हैं इस तालिका में सांख्यिकीय गणना द्वारा प्राप्त स्वतन्त्रता के अंश 498 पर **'टी'** परीक्षण का मूल्य 3.53 सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थकता स्तर से अधिक है जबकि 0º01 सार्थकता के स्तर पर तालिका का मान 2.58 है। उपरोक्त तालिका में उच्च मध्यमान 29.42 जो माध्यमिक स्तर की छात्राओं की अनाश्रितता का है तथा 28.05 जोकि छात्रों की व्यक्तित्व एकीकरण का है। सांख्यिकीय गणना से प्राप्त 'टी' का मान तालिका के मान से तुलनात्मक रूप में अधिक है। इस प्रकार इस परीक्षण परिणाम में छात्राओं का व्यक्तित्व एकीकरण छात्रों की तुलना में उच्च स्तरीय है।

अतः प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर पूर्व में निर्मित षून्य परिकल्पना ($H_0$1.5) 'उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की अनाश्रितता में सार्थक अन्तर नहीं है' अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष–

उपरोक्त तालिकाओं के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भावात्मक परिपक्वता के सांवेगिक स्थिरता, सांवेगिक प्रगति, सामाजिक समायोजनशीलता, व्यक्तित्व एकीकरण जैसे चरों के अध्ययन से ज्ञात हुआ है कि उपरोक्त समस्त चरों के प्राप्तांकों में पर्याप्त भिन्नता है जबकि भावात्मक परिपक्वता एवं अनाश्रितता आदि चरों से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर प्राप्त परिणामों के भिन्नता नहीं है। अतः कहा जा सकता है कि इन चरों के आधार पर पूर्व निर्धारित परिकल्पना निरस्त की जाती है।

सन्दर्भग्रन्थ सूची–

- आस्थाना, एस. (2007) विभिन्न संगठनों में अध्ययनरत किशोरों के व्यक्तित्व रचना शक्ति, आत्म प्रत्यय, शैक्षिक उपलब्धि एवं मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव का एक गहन अध्ययन, पी.एच. डी. (शिक्षा शास्त्र) छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर
- अवस्थी, बी. (2002) ए कंपैरेटिव स्टडी ऑफ इंटेलिजेंस, एंड एंजाइटी, लेवल ऑफ एस्पिरेशन, स्टडी हैबिट्स, सोसियो–इकोनामिक एंड कल्चर सेटिंग्स ऑफ हायर एंड लोअर अचीवमेंट ऑफ कानपुर एंड कानपुर देहात, शोध–प्रबंध, शिक्षाशास्त्र, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर
- दर्शना, सी. (2020) लेवल ऑफ एस्पिरेशन ऑफ हायर सेकेंडरी स्टूडेंट्स इन रिलेशन टू देयर अचीवमेंट मोटिवेशनः एंन अंपिरिकल स्टडी, साइकोलॉजी एंड एजुकेशन, 57(9)] 1206 – लोधी, एम. एस. एवं सिद्धकी, जे. अ. (2014) एटीट्यूड ऑफ स्टूडेंट टूवार्ड एथिकल एंड मोरल वैल्यू इन कराची, पाकिस्तान, जर्नल ऑफ रिसर्च एंड मेथड इन एजुकेशन. 4(2) 1211

- सेलीना, एस. (2018) ए स्टडी ऑफ सेल्फ कॉन्सेप्ट एंड लेवल ऑफ एस्पिरेशन ऑफ नाइंथ स्टैंडर्ड स्टूडेंट्स, इंटरनेशनल एजुकेशन साइंटिफिक रिसर्च जर्नल, 7(12)